तेरी आवाज़ ने ख़्वाबीदा[1] सदियों को जगाया है
तेरे नग़्मों को सुन कर ताइरे-दिल[2] चहचहाया है
नवाए आगही[3] पर झूम झूम उठा है दीवाना

सलामे-पीरे-मैख़ाना !
सलामे-पीरे-मैख़ाना !

मुसीबत में हमेशा हम तेरा ही नाम लेते हैं
तेरे बन्दे नियाज़े-बंदगी[4] से काम लेते हैं
तू ही मंज़िल, तू ही रहबर, तू ही है अज़्मे-रिन्दाना[5]

सलामे-पीरे-मैख़ाना !
सलामे-पीरे-मैख़ाना !

ये दुनिया दुश्मने-अमनो-मुहब्बत हो गई साक़ी
क़यामत हो गई साक़ी, क़यामत हो गई साक़ी
जगा दे कारवाने-ख़ुफ़्ता[6] को ऐ मीरे-फ़रज़ाना[7]

सलामे-पीरे-मैख़ाना !
सलामे-पीरे-मैख़ाना !

हटा दे चेहरा-ए-अनवर[8] से ग़ैबत[9] की नक़ाब इक दिन
मिले प्यासी नज़र को तेरे जलवों की शराब इक दिन
कि शौक़े-दीद[10] से 'दर्शन' हुआ जाता है दीवाना

सलामे-पीरे-मैख़ाना !
सलामे-पीरे-मैख़ाना !

[1]सोई [2]दिल का परिंदा [3]चेतना की आवाज़ [4]प्रार्थना [5]सबसे ज़्यादा मदहोश [6]सोया हुआ कारवाँ
[7]बुद्धिमान राहनुमा [8]नूर का चेहरा [9]छुपी हुई [10]देखने का शौक़

जब आदमी मुद्दआए-हक़[1] है तो क्या कहें मुद्दआ कहां है
खुदा है खुद जिसके दिल में पिन्हां[2] वो ढूँढता है खुदा कहां है

तमाम परतौ[3] हैं अक्से[4] परतौ, तमाम जल्वे[5] हैं अक्से जल्वा
कहां से लाऊँ मिसाले सूरत कि आप सा दूसरा कहां है

निहां है तक्मीले खुदशनासी[6] में जल्वा-हाए खुदाशनासी[7]
जो अपनी हस्ती से बेख़बर है, वो आपसे आश्ना कहां है

जिन्हें वसाइल[8] पे है भरोसा ये बात उनको बता दे कोई
बचा ले कश्ती को जो भंवर से, खुदा है, वो, नाखुदा कहां है

पड़ा ही रहने दो सर बसजदा, न छूटने दो यह आस्ताना
कि 'दर्शने' ख़स्ता का ठिकाना, तुम्हारे दर के सिवा कहां है

[1]परमात्मा जिसे चाहता है [2]छिपा हुआ [3,4]प्रतिबिंब [5]झलक [6]पूर्ण आत्मानुभव [7]परमात्मा के अनुभव की झलकें [8]साधनों

वो सलीक़ा[1] हमें जीने का सिखा दे साक़ी
जो ग़मे-दहर[2] से बेगाना बना दे साक़ी

सुन रहा हूँ कि मुयस्सर[3] ही नहीं दुनिया में
इक निगह राज़े-दो-आलम[4] जो बता दे साक़ी

खुश्क है मौसमे-एहसास[5], फ़ज़ा प्यासी है
ख़ुम[6] के ख़ुम सीना-ए-गेती[7] पे लुढा दे साक़ी

जोशे-मस्ती में बग़लगीर[8] हों बिछड़े हुए दिल
आज इन्सान को इन्सान बना दे साक़ी

ज़िन्दगी ख़्वाबे-मुसल्सल[9] के सिवा कुछ न सही
इसकी ता'बीर तो 'दर्शन' को बता दे साक़ी

[1]ढंग [2]दुनिया के दुख [3]संभव [4]लोक परलोक के रहस्य [5]संवेदना का मौसम [6]घड़ा [7]धरती की छाती पर [8]गले मिलें [9]निरंतर जारी रहने वाला स्वप्न

मुहब्बत की मताअे जावेदानी[1] ले के आया हूं
तेरे क़दमों में अपनी ज़िंदगानी ले के आया हूं

कहाँ सीम-ओ-गुहर[2] जिनको लुटाऊं तेरे क़दमों पर
बराए नज़्र, अश्क़ों[3] की रवानी ले के आया हूं

ज़मीन-ओ-मुल्क के बदले दिलों पे है नज़र मेरी
अछूता इक तरीक़े-हुक्मरानी ले के आया हूं

मेरे अशआर[4] में मुज़मिर[5] हैं लाखों धड़कनें दिल की
मैं इक दुनिया का ग़म दिल की ज़बानी लेके आया हूं

मुहब्बत नाम है बेताबी-ए-दिल के तसल्सुल[6] का
मुहब्बत की मैं 'दर्शन' यह निशानी ले के आया हूं

[1]अनश्वर पूँजी [2]चाँदी और हीरे-जवाहरात [3]आंसुओं [4]शब्दों [5]छुपी हुई [6]निरंतर बेचैनी

दौलत मिली जहान की, नामो-निशां मिले
सब कुछ मिला हमें न मगर मेहरबाँ मिले

पहले भी जैसे देख चुके हों उन्हें कहीं
अनजान वादियों में कुछ ऐसे निशां मिले

बढ़ता गया मैं मंज़िले-महबूब[1] की तरफ़
हाइल अगरचे राह में[2] संगे-गरां[3] मिले

हमको खुशी मिली भी तो बस आरज़ी[4] मिली
लेकिन जो ग़म मिले वो ग़मे-जाविदां[5] मिले

नज़रें तलाश करती रहीं जिनको उम्र भर
'दर्शन' को वो सुकून के लम्हे कहां मिले

[1]प्रियतम का धाम [2]रास्ते में बाधक [3]भारी पत्थर [4]अस्थायी [5]कभी खत्म न होने वाले ग़म